अष्टमः पाठः

यक्ष-युधिष्ठिर-संलापः

(महाभारतात्)

[प्रस्तुत पाठ 'यक्ष-युधिष्ठिर संलापः' महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत नामक महाकाव्य के 'वनपर्व' से उद्धृत है। वर्णित है कि वनवासी जीवन में पानी की खोज में गये चार पाण्डव देर तक नहीं लौटते तो युधिष्ठिर अपने उन चारों भाइयों (अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव) की खोज में निकलते हैं। वे एक सरोवर के पास पहुँचते हैं, जहाँ पर उनके चारों भाई मृत अवस्था में पड़े हुए हैं। अपने चारों भाइयों को मृत देखकर धर्मराज युधिष्ठिर व्याकुल हो जाते हैं, तभी उस सरोवर के पानी से एक अद्भुत आवाज सुनायी देती है और कुछ प्रश्न युधिष्ठिर से करती है। धर्मराज युधिष्ठिर उस दैवीय शक्ति का आह्वान करते हैं। वह यक्ष होता है और युधिष्ठिर से कहता है कि यदि तुम मेरे प्रश्नों का सम्यक् उत्तर दे दोगे तो मैं तुम्हें पानी भी दूँगा और एक भाई को जीवित कर दूँगा। यक्ष अपने प्रश्नों को युधिष्ठिर से करता है तथा युधिष्ठिर उसके प्रश्नों का उत्तर देते जाते हैं। यक्ष कहता है कि भूमि से अधिक भारी क्या है, आकाश से अधिक ऊँचा कौन है, वायु से अधिक तेज चलनेवाला कौन है और तिनके से अधिक हल्का क्या है? युधिष्ठिर उत्तर देते हैं– माता भूमि से भारी है, पिता आकाश से ऊँचा, मन वायु से अधिक तेज चलनेवाला तथा चिन्ता तिनके से भी अधिक हल्की होती है, आदि। इसी प्रकार यक्ष बार-बार प्रश्न करता है और युधिष्ठिर उसके प्रश्नों के उत्तर देते जाते हैं। प्रस्तुत पाठ में इसी का वर्णन है।

यक्ष उवाच—

किंस्विद्गुरुतरं भूमेः किंस्विदुच्चतरं च खात्।
किंस्विच्छीघ्रतरं वायोः किंस्विद्बहुतरं तृणात्।।१।।

युधिष्ठिर उवाच—

माता गुरुतरा भूमेः खात्पितोच्चतरस्तथा।
मनः शीघ्रतरं वाताच्चिन्ता बहुतरी तृणात्।।२।।

यक्ष उवाच—

किंस्वित्सुप्तं न निमिषति किंस्विज्जातं न चेङ्गते।
कस्यस्विद्हृदयं नास्ति कास्विद्वेगेन वर्धते।।३।।

युधिष्ठिर उवाच—

मत्स्यः सुप्तो न निमिषत्यण्डं जातं न चेङ्गते।
अश्मनो हृदयं नास्ति नदी वेगेन वर्धते।।४।।

यक्ष उवाच—

किंस्वित्प्रवसतो मित्रं किंस्विन्मित्रं गृहे सतः।
आतुरस्य च किं मित्रं किंस्विन्मित्रं मरिष्यतः।।५।।

युधिष्ठिर उवाच—

विद्या प्रवसतो मित्रं भार्या मित्रं गृहे सतः।
आतुरस्य भिषङ्मित्रं दानं मित्रं मरिष्यतः।।६।।

यक्ष उवाच—

धन्यानामुत्तमं किंस्विद्धनानां स्यात्किमुत्तमम्।
लाभानामुत्तमं किं स्यात्सुखानां स्यात्किमुत्तमम्।।७।।

युधिष्ठिर उवाच—

धन्यानामुत्तमं दाक्ष्यं धनानामुत्तमं श्रुतम्।
लाभानां श्रेय आरोग्यं सुखानां तुष्टिरुत्तमा।।८।।

यक्ष उवाच—

किं नु हित्वा प्रियो भवति किं नु हित्वा न शोचति।
किं नु हित्वाऽर्थवान्भवति किं नु हित्वा सुखी भवेत्।।९।।

युधिष्ठिर उवाच—

मानं हित्वा प्रियो भवति क्रोधं हित्वा न शोचति।
कामं हित्वाऽर्थवान्भवति लोभं हित्वा सुखी भवेत्।।१०।।

यक्ष उवाच—

मृतः कथं स्यात्पुरुषः कथं राष्ट्रं मृतं भवेत्।
श्राद्धं मृतं कथं वा स्यात्कथं यज्ञो मृतो भवेत्।।११।।

युधिष्ठिर उवाच—

मृतो दरिद्रः पुरुषो मृतं राष्ट्रमराजकम्।
मृतमश्रोत्रियं श्राद्धं मृतो यज्ञस्त्वदक्षिणः।।१२।।

यक्ष उवाच—

कः शत्रुर्दुजयः पुंसां कश्च व्याधिरनन्तकः।
कीदृशश्च स्मृतः साधुरसाधुः कीदृशः स्मृतः।।१३।।

युधिष्ठिर उवाच—

क्रोधः सुदुर्जयः शत्रुर्लोभो व्याधिरनन्तकः।
सर्वभूतहितः साधुरसाधुर्निर्दयः स्मृतः।।१४।।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित श्लोकों की ससन्दर्भ व्याख्या हिन्दी में कीजिए—
   (क) माता गुरुतरा भूमेः खात्पितोच्चतरस्तथा।
   मनः शीघ्रतरं वाताच्चिन्ता बहुतरी तृणात्।।
   (ख) किं नु हित्वा प्रियो भवति किं नु हित्वा न शोचति।
   किं नु हित्वाऽर्थवान्भवति किं नु हित्वा सुखी भवेत्।।
   (ग) मृतः कथं स्यात्पुरुषः कथं राष्ट्रं मृतं भवेत्।
   श्राद्धं मृतं कथं वा स्यात्कथं यज्ञो मृतो भवेत्।।
२. निम्नलिखित श्लोक का अर्थ संस्कृत में लिखिए—
   माता गुरुतरा भूमेः खात्पितोच्चतरस्तथा।
   मनः शीघ्रतरं वाताच्चिन्ता बहुतरी तृणात्।।
३. निम्नलिखित सूक्तियों की ससन्दर्भ व्याख्या हिन्दी में लिखिए—
   (क) क्रोधः सुदुर्जयः शत्रुर्लोभो व्याधिरनन्तकः।
   (ख) आतुरस्य भिषङ्मित्रं दानं मित्रं मरिष्यतः।
४. 'यक्ष-युधिष्ठिर संलापः' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
५. पाठ के उन श्लोकों को कण्ठस्थ करें जो आपको अच्छे लगते हैं।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

'यक्ष-युधिष्ठिर' की बातचीत के बारे में आप जानते हों, तो उल्लेख कीजिए।

●●●